पाणिवादकः । — 51. Calc. Ausg. und D. मापाजीवी, die Scholien wie wir. — 52. = मापाकपर, die Scholien.

Str. 926, 54. Schol. विनोदा जिप ।

Str. 927, 56. Calc. Ausg. und D. च्हारने । Schol. म्राह्माद्यां प्रा-णिना परिमानच्ह्रारनम् पृषाद्शादिवाचास्य म्रवम्

Str. 928, 57. Calc. Ausg. und D. जालिकश्च। — 59. Calc. Ausg. श्रुवं। Schol. श्रुनित श्रुम्बम् — Calc. Ausg. und D. वरारका। Schol. वद्यते वदारः। द्वारेत्यारे निपात्यते। के वदारकः। — Calc. Ausg. B. E. गुणः। D. गुणा। Wollte man die Lesart गुणः aufnehmen, müsste man तस्त्रीर्वरो गुणः lesen; vgl. «Unadi-Affixe» III. 156.

Str. 930, 65. Calc. Ausg. und D. श्रीनिकः । Schol. सूनं प्रयोजन-मस्य सीनिकः । — षिट्की प्रि।

Str. 931, 68. Schol. मृगादिबन्धनिनित्तं तालवागुरादिसाधनम्

Str. 933, 74. Calc. Ausg. चाएडाले und पुक्तसाः (so auch D.)। Schol. चाएडाले। पि। बुक्तित घास्य बुक्तसः। चुक्तस इत्यन्ये। — 75. Calc. Ausg. दिवाकीर्तिर्तनं ।

Str. 934, 76. Calc. Ausg. নিন্দ্রা মূল্যা (so auch D.) বচ্টা (so auch E.), die Scholien wie wir.

Str. 938, 84. Schol. या॰ समुद्रश्तना समुद्रकाची समुद्रवसना इत्याद्यः। Str. 939, 86. Schol. राद्सी म्रयमसन्तो क्तीवलिङ्गः। इडनाद्रोद्सि-शब्दाद्विवचने राद्सी। म्रव्ययमपि।

Str. 940, 89. सक्ताइता भूमि:, die Scholien.

Str. 941, 96. Diese Zeile scheint eine Erklärung der folgenden zu sein, aber der Scholiast nimmt 4 Synonyme an.